अजन्मी बेटी का खत माँ के नाम

मेरी प्यारी मम्मी,

मैं खुश हूँ और रब से अरदास करती हूँ कि आप भी सुखी रहें यह खत इसलिये लिख रही हूँ कि मैंने एक सनसनीखेज खबर सुनी हैं। खबर यह है कि आपको मेरे कन्या होने का पता चल गया हैं आप मूझे अजन्मी लेने से रोकने जा रही हैं मुझे तो यकीन ही नही हो हुआ। भला, मेरी मम्मी ऐसा कैसा कर सकती है ? कोख में ही अपनी लाडली के शरीर पर नश्तरों की चुभन एक माँ कैसे सह सकती हैं ?

बस आप एक बार कह दीजिए यह जो कुछ मैंने सुना हैं। सब झूठ हैं। दरअसल यह सब सुनकर मै दहल सी गई हूँ। मेरे तो हाथ भी इतने नाजुक है बताशों जैसे कि डॉक्टर के क्लिनिक की तरफ जाते वक्त आपकी चुन्नी जोर से नहीं खींच सकती। बाहें इतनी पतली और कमजोर है सरसों की जैसी कि कच्ची गंदल जैसी की इन्हें आपके गले में डाल कर लिपट भी नहीं सकती।

मुझे एक दवा इस तरह आपके शरीर से फिसला देगी जैसे गीले हाथो से साबुन की टिकिया फिसलती हैं। ना मम्मी ना, ऐसा कभी मत करना, खत इसलिए लिख रही हूँ कि अभी तो मेरी आवाज भी नहीं हैं। अरदास भी करूँ तो किससे और केसे ? मुझे जन्म लेने की बडी ललक हैं। अभी तो आंगन में नन्हे पैरो से छनछन नाचना है। मैं आपका खर्चा नही बढाऊगी। मत लेकर देना मुझे पायजेब। मैं दीदी की छोटी पड चुकी पायजेब पहन लूंगी। भैया के तंग हो चुके कपडे भी ओढ लूंगी। बस एक बार मुझे इस कोख से निकलकर चांद तारो से भरे आपके आसमान तले जीने का मौका भर दीजिए। मै आपकी बेटी हूँ आपकी मुहब्बत की शहजादी। मुझे अपने घर में उतर लेने दो माँ, बेटा होता तो आप पाल लेती, फिर मुझ मे क्या बुराई हैं ?

ना–ना दहेज से मत डरना। यह सब भुलावा हैं। एक बेटे के लिए कई बेटियों की बलि आखिर यह महा पाप भी तो आप और आपके चहेते बेटो पर चढेगा।

बस मुझे जन्म दे दो। कुछ कोशिश आप करना कुछ मैं करूंगी। पैरो पर खडी हो जाऊंगी। बस फिर दहेज क्या चीज हैं। इसका भय तो फुर्र हो जायेगा। देखना मेरे हाथो मे भी मेहंदी सजेगी शगुन भरी डोली निकलेगी ओर आपके आंगन से चिडिया का चंबा बनकर उड जाऊगीं। आप अभी से मुझे मत उडाइए। मै आपके प्यार का बीज हूँ। मुझे मत मारिए माँ। अपनी बगल की डाल पर फूल बनकर खिल लेने दीजिए।

कन्या को कोख मे मत मारो, जीवन चक्र मत बिगाडो।